हिन्दी

श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

C/o. शाह गोविन्दजी वीरम फेक्टरी कम्पाउन्ड, मोंढा रोड, औरंगाबद (महा.) ४३१ ००१

सम्यग्ज्ञान प्रवेशिका

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆

ऐनरोलमेन्ट नंबर

८

जनवरी - 2023 शहर

विद्यार्थी का नाम

प्रश्न-१ रिक्त स्थान	
(१)	पुरुष लिंग
(२)	क्षोभ वंदन
(३)	संवर
(४)	मध्यस्थभाव
(५)	कर्म क्षय
(६)	गुणों के दर्शन
(७)	काश्यप
(८)	विकथा
(९)	स्थिती बंध
(१०)	परिज्ञान
(११)	जैनेन्द्र व्याकरण
(१२)	दीर्घ दृष्टि
(१३)	द्रव्य निर्जरा
(१४)	क्षणिक
(१५)	कायोत्सर्ग
(१६)	पंचिंद्रिय
(१७)	सात्वी
(१८)	चक्रवर्ती
(१९)	सुपक्ष
(२०)	मिथ्या दृष्टि देव

प्रश्न-२ एक ही शब्द में	
(१)	अन्यलिंग सिद्द
(२)	विनय
(३)	गुरू स्थापनासूत्र
(४)	कौडिन्य
(५)	आहार त्याग
(६)	प्रमाद
(७)	काया-क्लेशतप
(८)	अंतराय कर्म
(९)	भावोत्सर्ग
(१०)	सिंह की
(११)	अणोज्जा
(१२)	सुहदेवसी
(१३)	बहुमान
(१४)	निर्जरा
(१५)	~~ब~~ पंद्रह
(५)	संग्रह
(६)	अभ्यंतर
(७)	योजन
(८)	योनि
(९)	सुपक्ष
(१०)	सर्व
(११)	नारकी
(१२)	भेद
(१३)	चारित्र
(१४)	पराया
(१५)	अेक बार बोलने संबंधी
(१६)	अनादि
(१७)	कलुषित
(१८)	प्रवर्तमान
(१९)	हीन
(२०)	राजकथा

प्रश्न-३ शब्दार्थ	
(१)	रसत्याग
(२)	दर्शनावर्णीय
(३)	चार ~~प्रकार~~
(४)	नौ प्रकार से

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ			
(१)	५	(६)	२
(२)	३	(७)	८
(३)	७	(८)	१०
(४)	६	(९)	९
(५)	४	(१०)	१

प्रश्न-५ संख्या में जवाब	
(१)	८
(२)	७
(३)	२०
(४)	९
(५)	३० वर्ष
(६)	९५
(७)	१ योजन
(८)	१८ हजार
(९)	१०८
(१०)	६० कोडाकोडी सा०

प्रश्न-६ ✓ या ×		प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर	
(१)	×	(१)	१६
(२)	✓	(२)	९
(३)	×	(३)	२२
(४)	✓	(४)	२
(५)	×	(५)	६
(६)	×	(६)	१७-१८
(७)	✓	(७)	१८
(८)	×	(८)	११-१२
(९)	✓	(९)	६
(१०)	×	(१०)	१४

प्रिंटिग भूल के कारण अथवा हमसे रह गयी भूल के कारण विद्यार्थीओं को जो तकलीफ होती है, उसके लिये हम क्षमाप्रार्थी है। ऐसे संजोगो में विद्यार्थी को उसका पूरा मार्क दिया जाता है।

रीमार्क ______________________ जांचनेवाले की सही ______________________

प्रश्न - ८

१. राजा को धन देने की इच्छा हो परंतु भंडारी की इच्छा न हो तो वह विघ्न डालकर राजा को अटका सकता है, ऐसा है अंतराय कर्म। इससे राजा के भंडारी जैसा है 'अन्तराय कर्म'।
बेडी से जकडा हुआ गुनाहगार नियत समय से पहले मुक्त हो सकता नहीं, उसी तरह आयुष्य कर्म पूर्ण न हो तब तक उस गति में से मुक्ति नहीं मिलती, इससे बेडी जैसा है 'आयुष्य कर्म'।

२. दोष देखने की आदतवाली दृष्टि को कभी भी गुण दिखाई नहीं देते जबकि गुणों को पहचान ने में काबिल बनी हुई नजर को कहीं भी दोष दिखता नहीं। अनादिकाल से संसार में परिभ्रमण करते हुए इस जीवको अन्य जीवों के दोष देखने की और खुद के गुण देखने की आदत हो गयी है। यदि इस आदत को बदला जाय तो हमारा कार्य बदला जा सकता है।

३. पांच इंद्रियो के विषयों को काबू में रखनेवाले, तथा नौ प्रकार की बाडों को धारण करनेवाले, चार कषायों से मुक्त, ये अठारह गुण; ।) तथा पांच महाव्रतों को धारण करनेवाले, पाँच प्रकार के आचारों का अच्छी तरह से पालन करने वाले, पाँच समिति का पालन करनेवाले, तीन गुप्तिओं का पालन करने वाले, इस प्रकार छत्तीस गुणों से युक्त मेरे गुरु हैं। इस सूत्र में आचार्य भगवत् के ३६ गुणों का वर्णन है।

४. महावीर प्रभु के पिता काश्यप गोत्रवाले थे। उनके तीन नाम इस प्रकार: सिद्धार्थ, श्रेयांस, यशस्वी। उनकी माता वासिष्ठ गोत्र की थी। उनके नाम थे त्रिशला, विदेहदिन्ना, प्रीतिकारिणी। उनके काका सुपार्श्व नामक थे। नंदीवर्धन नाम के बडे भाई थे। सुदर्शना नामक बहन थी और यशोदा नामक पत्नी थी। प्रभु को प्रियदर्शना नामक पुत्री हुई। उनकी शादी जमाली के साथ हुई। उन्हें शेषवती नामक पुत्री हुई।

५. मोदक के आकार में विविधता देखने मिलती है, कोई मोदक छोटा होता है, कोई मध्यम होता है, कोई बडा होता है। उनका वजन भी अलग अलग होता है, उसमें कण भी कम ज्यादा होते है। उसी तरह कर्म बांधते समय योगानुसार आत्मा कम ज्यादा कर्म दलिको के समूह को आत्मा के साथ जोडते हैं। उसे प्रदेशबंध कहते हैं।